भाग सनी भाग
जयंती रंगनाथन
चित्रांकन : बरखा लोहिया

नेहरू बाल पुस्तकालय

ऐशली चूहा बूढ़ा और बीमार हो चला था। [illegible] दिन उसने अपने पोते सनी को बुलाया और उसे पास बिठाकर कहा, "सनी, तुम्हें आज मैं [illegible] हूँ। मैंने तुमसे झूठ कहा था कि इस बिल के अलावा दुनिया में दूसरी [illegible] है। पर मैं डरता था कि बिल से बाहर निकलते ही तुम मुझे [illegible] मैंने तुमसे [illegible] झूठ कहा कि चूहे सिर्फ दौड़ना जानते हैं। सच बात तो यह है सनी [illegible] में तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि मैं अब [illegible] हूँगा और मेरे बाद तुम्हें अकेले ही सबका सामना करना होगा।"

[illegible] कुछ समझ पाता, दादाजी चल बसे।

सनी ने आज तक कभी बिल्ली की शक्ल नहीं देखी थी। उसने डरते-डरते [illegible] पर रखी ईंट को हटाया और बाहर निकला। [illegible] कितनी सुंदर थी। कितनी रोशनी थी। [illegible] सामने उसे ढेर सारे लड्डू पड़े नजर आए।

सनी गपागप लड्डू खाने लगा।
इसके बाद उसकी नजर पड़ी, एक थाल
रखी मठरियों पर।
सनी एक मठरी को कुतरने लगा
खाते-खाते उसका पेट भर गय
मन नहीं भरा। उसे अब जब
नींद आने लगी।

दरअसल वह पूरन हलवाई की दुकान थी। सनी के ... उसके लिए खाना वहीं से लाते थे, लेकिन कम-कम। उन्हें लगता था कि सनी को ज्यादा तल... की ... चाहिए। सनी ने जिंदगी में पहली बार इतना खाना खाया था। उसमें इतनी ... थी ... पास जाकर सो जाए।
उसने अपने आस-पास घूमकर दे... नजर आई। सनी रजाई के पास पहुँच गया।

वह रजाई नहीं थी, सुनहरे-भूरे रंग की सोना बिल्ली थी। वह पूरन हलवाई की पालतू बिल्ली थी। दोपहर को खूब खा-पीकर वह भी सोने [illegible] इसलिए सनी को देखकर भी उसके मुँह में पानी नहीं आया।

पूरन हलवाई कड़ाही में समोसे तलने बैठा, तो वह यह देखकर चौंक गया कि सोना बिल्ली की गोदी में सिर रखक[illegible] रहा है। उसने जोर से आवाज लगा[illegible]

“अर्रर्रर्र हट[illegible]”

सनी की आँख खुल गई।
वह चिल्लाने लगा,

“भागो रे, दुश्मन [illegible]”

जैसे ही वह कूदा,
सोना उछलकर खड़ी हो गई और
उसके पैर से ठोकर लगकर बड़ी वाली
कड़ाही लुढ़कने लगी।

सनी ने लुढ़कती हुई काली कड़ाही को देखकर समझा कि
यही बिल्ली है, उसकी दुश्मन।

लपककर सनी पूरन की पगड़ी में घुस गया।
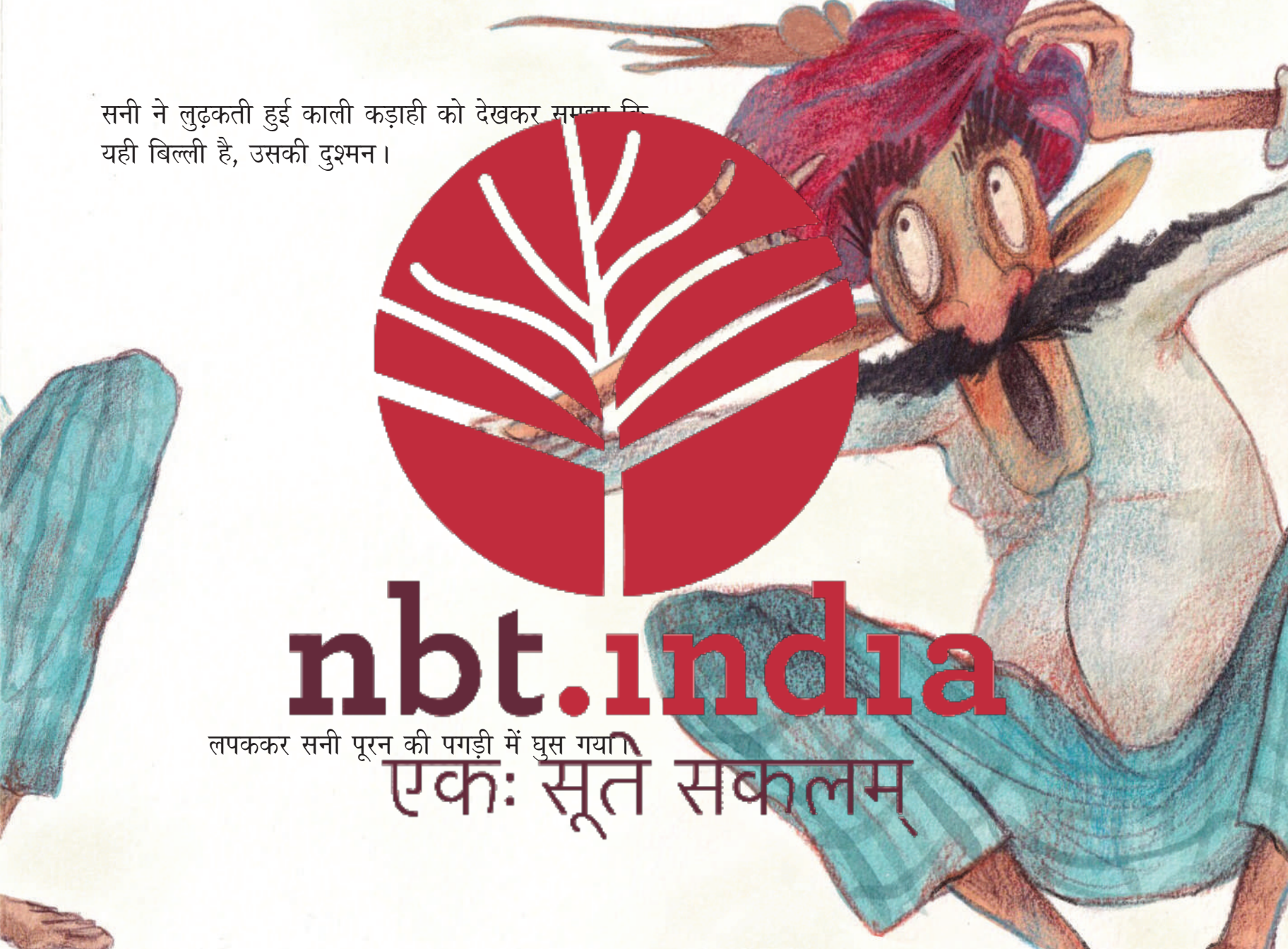
सनी की समझ नहीं आया कि वह बचकर कहाँ जाए।
काली कड़ाही तो झूमती हुई उसी के पास आ रही थी
आनन-फानन वह एक छलाँग मारकर पानी की टंकी में कूद पड़ा।

सोना के गाल पर पुच्ची देकर सनी ने एक बर्फी का टुकड़ा उठाया और बिल की तरफ चल पड़ा।
उसके जाने के बाद बड़ी देर तक सोना [illegible] कि यह नटखट चूहा किसे दुश्मन [illegible]।
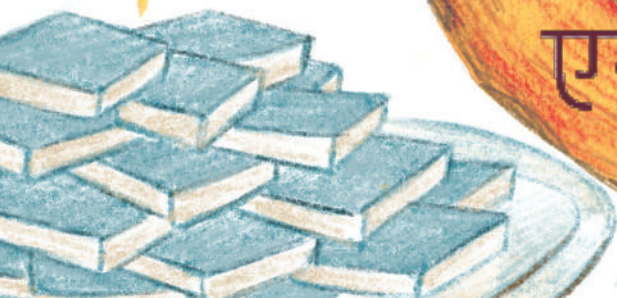
नूतन ग्राफिक्स, साहिबाबाद द्वारा शब्द संयोजन तथा इंडिया ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

जयंती रंगनाथन की परवरिश लौह शहर भिलाई में हुई। मुंबई से एम.कॉम. किया और वहीं हिंदी पत्रिका धर्मयुग में काम करना शुरू किया। उसके बाद सोनी एंटरटैनमेंट चैनल, मलयाला मनोरमा समूह, अमर उजाला [illegible] लगभग तीन दशकों से मीडिया में सक्रिय जयंती रंगनाथन के पाँच उपन्यास, चार कहानी संग्रह और तीन बच्चों के उप[illegible] टीवी, फिल्म, वेब और ऑडियो माध्यम के लिए रचनात्मक लेखन। संप्रति हिंदुस्तान अखबार में एक्जीक्यूटि[illegible]

बरखा लोहिया ने दिल्ली के कॉलेज ऑफ [illegible] बच्चों की पुस्तकों के चित्रण का प्रशिक्षण लेने के बाद साईकिल, प्लूटो जैसी बाल पत्रिकाओं के [illegible] द्वारा [illegible] बुक्स से भी आई है।

nbt.india

एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

₹ 35.00
ISBN 81-237-9014-7
9788123790145
19201691

nbt.india
एक: सते सकलम
भाग सनी भाग
t ;rh j xukFku
चित्रांकन : cj[kk ykfg;k